JAAFR INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL
JOURNAL OF ADVANCE AND FUTURE RESEARCH
JAAFR.ORG | ISSN : 2984-889X
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बैरागण मीरा : महिला सशक्तिकरण की अग्रदूत (एक अध्ययन)

नितिशा कौशल, प्रो. (डॉ.) दिग्विजय कुमार शर्मा

हिंदी विभाग, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा

सार : प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा यह विश्लेषित किया जायेगा की मीरा गिरधर की बैरागण बन नारी सशक्तिकरण की अग्रदूत के रूप में उजाग्रित हुई | गिरधर बैरागण मीरा ने पितृ सत्तात्मक समाज के होते हुए भी स्वयं को एक स्वतंत्र नारी के रूप में उजागर कर महिला सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया | प्रस्तुत शोध के माध्यम से उनके व्यक्तित्व जिसमें मुख्यतः वैराग भाव को उनकी कृतियों अर्थात् उनके पदों द्वारा अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा | मध्यकाल में जब पितृसत्ता का बोलबाला था, उस समय में भी बाई सा ने अपने नाम की ऐसी छाप छोड़ी की आज भी जब कभी राजपूत वंश का नाम लिया जाता है तो मीराबाई का नाम अवश्य आता है | निष्कर्षतः कहा जा सकता है की गिरिधरनागर की बैरागण मीरा ने महिला सशक्तिकरण की अग्रदूत बन नारी समाज के लिए स्वतंत्रता की उड़ान भरने हेतु पुरुषवादी सोच का खंडन एवं बहिष्कार करते हुए उन्मुक्त गगन प्रदान करने का भरसक प्रयास कर नारीवाद को जाग्रत किया है|

प्रमुख शब्द : बैरागण, वैराग्य वृत्ति, पितृसत्ता, मीरा, बाई सा, उन्मुक्त, गिरिधर गोपाल, गिरिधर नागर, महिला/नारी सशक्तिकरण, अग्रदूत, पुरुषवाद |

1. प्रस्तावना :

पूर्व मध्यकाल जो मुख्यतः भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है और भक्तिकाल के मुख्य संतों का नाम आते ही कृष्ण बैरागन मीरा का नाम भी पूर्ण श्रद्धा भाव के साथ लिया जाता है | मीरा जिनके जन्म का मूलभूत उद्देश्य ही गिरधर की भक्ति था, उन्होंने अपने इस उद्देश्य को प्राप्त करते हुए समाज में नारी के सम्मान हेतु भी कुछ ऐसे कार्य किये जिसे युगों-युगों तक याद किया जायेगा | समाज की प्रताड़ना सहते हुए अपने गिरधर को प्राप्त किया एवं पितृसत्तात्मक सोच का पुरज़ोर विरोध किया | गिरधर की बैरागण बन समाज में फ़ैली कुप्रथाओ को अस्वीकार करते हुए नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया | इस शोध का मूल उद्देश्य ही यही है की एक नारी पुरुषवादी सोच रखने वाले समाज में किस प्रकार पति के न होते हुए भी बिना चरित्र गवाए भी अपना जीवन-यापन अपने मन माने तरीके से कर सकती है | सामाजिक कुप्रथाओं के होते हुए भी उन्होंने उनका खंडन तर्कसंगत विचारधारा द्वारा किया | गृहस्थ में रहते हुए एक बैरागन होकर रहना कोई बाएं हाथ का खेल नहीं है | निष्कर्षतः कृष्ण बैरागण मीरा अपनी भक्ति एवं नारी सशक्तिकरण की मुहीम छेड़ने में एक अग्रदूत महिला है जिनके विचार पीढ़ी दर पीढ़ी प्रगतिशील हैं |

2. बैरागण मीरा :

बैरागण अर्थात जीवन से अनासक्त (detatched) होकर रहना, जहाँ बाहरी चीजों के मिलने या खोने से मन विचलित न होना | राजकुल में जन्म तथा विवाह होने के पश्चात् भी बाई सा ने एक बैरागण की भांति ही जीवन यापन किया क्योंकि जब व्यक्ति भीतर से परिपूर्ण होता है तथा ईश्वरीय गुण संचित कर लेता है तो उसी दिशा की ओर अग्रसर होता है और उस स्थिति में सांसारिक सुख, रिश्ते-नाते, सगे-सम्बन्धी तथा बहुमूल्य वस्तुएं भी तुच्छ प्रतीत होती है और यदि कोई इन वस्तुओं का उपयोग अथवा भोग करता भी है तो उसे भी वह अपने आराध्य को प्रसन्न करने हेतु उन वस्तुओं में आसक्त नहीं होता | जिस प्रकार मीरा बाई श्रृंगार, नृत्य तथा पद गायन अपने गिरधर गोपाल के लिए ही किया करतीं थी अन्यथा उन्हें इन सभी वस्तुओं से लेश मात्र भी लगाव या मोह नहीं था | जो बाई सा के पदों में स्पष्ट रूप से देखा जाता है

बाला मैं बैरागण हूंगी।
जिन भेषां म्हारो साहिब रीझे, सोही भेष धरूंगी।
सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूंगी।
जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी।
गुरु के ज्ञान रंगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी।
प्रेम- पीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहुँगी।
या तन की मैं करूँ कींगरी, रसना नाम कहूँगी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साधां संग रहूंगी।

(पृष्ठ संख्या ३४७ मीरा सुधा सिन्धु प्रथम भाग)

गिरिधर प्रेम में लिप्त बाई सा उन्हें याद करते हुए कई बार नृत्य करने लगती , तो कभी पद गायन के साथ अश्रुप्रवाह होने लगते जो इस ओर संकेत करता है की बाई सा कृष्ण नाम में पूर्णतः डूबी रहती और संसार में रहकर भी संसार से दूर रही | एक वास्तविक भक्त का यही लक्षण होता है | बाई सा कृष्ण प्रेम में इस प्रकार डूबी रहती की हर प्रहर अपने गिरिधर को निहारतीं रहती , उन्हीं की लीलाओं में डूबी रहतीं और उन लीलाओं का साक्षात्कार भी करती | भोजराज से विवाह से पूर्व उनका विवाह एक रात पहले अपने गिरिधर से हुआ और जब माँ यह मानने के लिए तैयार नहीं थी की उनका विवाह हो गया है तो उस विवाह के सूचक चिन्ह् भी उन्होंने अपनी माँ को दर्शाए जो इस बात का संकेत देता है की मीरा ही नहीं गिरधर भी मीरा के ही थे |

माई म्हांने सुपने में परण गया जगदीस ॥ (टेक)
सोती को सुपणा आविया जी सुपणा बिस्वा बीस ॥ १
गैली दीखै मीराँ बावली सुपणा आलजंजाल ।
माई म्हाँने सुपणाँ में परण गया गोपाल ॥ २
अंग अंग हलदी में करी जी सुधे भीज्यो गात ।
माई म्हाँने सुपणाँ में परण गया दीनानाथ ॥ ३
छप्पन कोट जहां जान पधारे दूल्हो श्रीभगवान ।
सुपणे में तोरण बाँधियौ जी सुपणे में आई जान ॥ ४
मीराँ को गिरधर मिल्या जी पूरब जनम के भाग ।
सुपणे में म्हांने परण गया जी हो गया अचल सुहाग ॥ ५
(मीरां बृहत् पदावली प्रथम भाग पद संख्या ३७९ पृष्ठ १७९)

3. मीरा और महिला सशक्तिकरण – मध्यकाल जो पूर्ण रूप से पुरुषवाद तथा पितृसत्ता अधिकृत था ऐसे समय में बाई सा ने उन रूढ़िवादी सांख्लों को तोड़कर स्त्रियों के लिए एक ऐसी बीड़ा उठाई की महिलाएं अपने अधिकारों को समझें | उन्होंने पुरुष समाज को चुनौती देते हुए अधिकारों की प्राप्ति का एक ऐसा शंख नाद किया जिसकी ध्वनि आज भी कानों में सुनाई देती है | आज इस आधुनिक युग में भी हर स्त्री जहाँ अपने अधिकार प्राप्ति के लिए लड़ रही रही है और काफ़ी हद तक अधिकार प्राप्त कर भी लिए है, उसका बिगुल पौराणिक काल से बजाया जा रहा था | जिस प्रकार सीता को अग्नि परीक्षा देकर स्वयं को सिद्ध करना पड़ा, द्रौपदी को न चाहते हुए भी पांचो भाइयों का होकर रहना पड़ा, स्वयंवर की आड़ में प्रतियोगिता करवाना और उपहार स्वरुप अपनी पुत्री को भेंट कर देना, मध्यकाल में स्वयं की सीमाओं और राज्यों को बचाए रखने के लिए वैवाहिक संधि द्वारा अपनी पुत्री की भेट चढ़ा देना (उदाहरण मुग़ल – राजपूत विवाह संधि), वैसे बाई सा और भोजराज का विवाह भी इसी विवाह संधि के अंतर्गत ही आता है | महाभारत कल की भी बात की जाये तो भीष्म ने अपनी शक्ति के बल पर अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका का अपहरण किया और जब इस बात का पता चला की अम्बा साल्व से प्रेम करती है और उसे ही अपना वर चुन बैठी है उस स्थिति में न तो पितामह भीष्म ने उन्हें अपनी पत्नी स्वीकार किया क्योंकि वे वचनबद्ध थे और उधर विचित्रवीर्य ने भी स्वीकारने से मना कर दिया और अम्बा को ठुकरा दिया | दूसरी ओर साल्व ने भी अम्बा को यह कहकर ठुकरा दिया की मैं किसी से दान नहीं लेता और इस प्रकार पुरुष सत्ता के चलते हर ओर से अम्बा ठुकरा दी गई ,कहने का तात्पर्य है तब भी एक स्त्री अपने अधिकार की लड़ाई लड़ रही थी और आज भी तथा यह भी प्रतीत होता है यह प्रथा युगों–युगों से चली आ रही है और यह चिरकाल तक चलती रहेगी | नारी भी सम्मान की अधिकारिणी है, परन्तु न जाने ऐसा समय कब आयेगा ? विवाह के पश्चात् अपना घर छोड़कर नारी ही बलिदान का पात्र बनती है और ससुराल पक्ष के प्रति उसका पूर्ण रूपेण समर्पण भाव अपेक्षित होता है | जन्म लेते ही माता–पिता पराया धन कहकर सम्बोधित करते है और ससुराल जाने पर वो अधिकार प्राप्त नहीं होता जिसकी वह हक़दार है | स्वयं में परिपूर्ण होकर भी नारी को दर–दर की ठोकर ही प्राप्त होती है | नारी ही इस धरा पर सृष्टि की सृजनात्मक शक्ति एवं उर्जा का मूल आधार है परन्तु फिर भी उसी की भेंट चढ़ाई जाती है – जन्म से पूर्व ही भ्रूण की जांच करना और कन्या होने पर उसकी हत्या करना, सती प्रथा, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, दहेज़ उत्पीडन, माता पिता के मान मर्यादा का जिम्मा यह सब एक स्त्री के भाग्य में ही क्यों लिखा गया है ? महिला सशक्तिकरण की मुहीम न जाने कब से चली आ रही है परन्तु उसका निष्कर्ष क्या निकला ? केवल पन्नो में अथवा सोशल मीडिया आदि तक ही यह सिमित रह गया है | हां कुछ स्त्रियाँ पढ़ लिख कर बहुत आगे बढ़ गई है , चाँद पर भी अपने पाँव रख दिए है परन्तु उनसे फिर भी उम्मीद लगाई जाती है की चाँद पर जाने से पूर्व वह घर का सारा काम कर के जाए तभी समाज में वह एक कुलीन स्त्री का दर्जा प्राप्त करेगी, भले ही वह देश की राष्ट्रपति क्यों न बन जाए पर उसके जीवन में भी एक ऐसा दौर आया होगा जब उस से भी यह प्रश्न किया गया होगा की खाना पकाना जानती हो या नही, पति की सेवा करती हो या नहीं आदि ?

मीराबाई जो मात्र एक नाम ही नहीं है एक अमिट छाप है इस रूढ़िवादी समाज के खिलाफ, नारी सशक्तिकरण की एक जीती जागती मूरत है ,उन्हें किसी बात की कोई परवाह नहीं थी | **"संतन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई", पग घुँघरू बांध मीरा नाची** आदि पद इस बात के उदाहरण है की स्त्री यदि ऐसा कुछ करती है तो मान मर्यादा गवां देती है , ऐसा कोई भी प्रश्न या लांछन पुरुष वर्ग पर क्यों नहीं लगाया जाता ? और जब मीरा ने इन सभी बातों का विरोध किया तो वह कुल की मर्यादा खो देने की जिम्मेदारी की अधिकारीन हुई | **महादेवी वर्मा द्वारा चार व्याख्यानों के संग्रह मीरा और मीरा** में इस बात की पुष्टि की गई है की चित्तोड़गढ़ के करीब डगला नमक जगह है, वहीं के करीब की मीरा थी और वहां के राजपूत समाज में मीरा अब तक उनके अनुसार कुलांगार है, जिसने कुल की मर्यादा नष्ट की तथा अपनी शर्तों पर अपना जीवन यापन किया और इसी दहशत से पिछली नौ पीढ़ियों में से किसी राजपूत ने दूर–दूर तक अपनी बेटी का नाम मीरा नहीं रखा | मीरा की वाणी में साफ़–साफ़ पुरुषवादी सोच के प्रति विद्रोह झलकता है जो उसे स्त्री होने पर बन्धनों में जकड़ना चाहते थे –

राणो म्हाँने या बदनामी लगे मीठी ।
कोई निंदो कोई बिन्दो मैं चलूँगी चाल अपूठी ।
साँकडली सेरयाँ जन मिलिया क्यूँ कर फिरु अपूठी ।
सतसंगति माँ ज्ञान सुणै छी , दुर्जन लोगाँ नै दिठी ।
मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर , दुर्जन जलो जा अँगीठी ।
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या ३३)

मीरा का विद्रोह पुरुष समाज के प्रति नहीं बल्कि उनकी इस रूढ़िवादी सोच के प्रति था और जो उनके कुछ पदों में भी देखने को मिलता है फिर चाहे वह कोई स्त्री ही क्यों न हो जो स्वयं स्त्री की बातों का खंडन कर उसे पुरुष समाज के आधीन बना दे, ऐसे में जब बाई सा की नन्द ऊँदा बाई उन्हें समझाने गई की ऐसा करने से कुल मर्यादा नष्ट होती है, स्त्री को ये सब नहीं करना चाहिए आदि तब मीरा बाई उस बात का विरोध करने से भी पीछे नहीं हटीं क्योंकि भले ही एक स्त्री ने दूसरी स्त्री को यह बात कही परन्तु सोच तो स्त्री पर रोक लगाने के पक्ष में थी इसलिए उनका विरोधी पुरुष समाज नहीं पुरुषवादी सोच के प्रति था :

मीराँ बात नहीं जग छानी , उदाबाई समझो सुघड़ सयानी ।।
साधू मात पिता कुल मेरे , सजन सनेही ज्ञानी ।
संत चरण की सरण रैन दिन , सत्य कहत हूँ बानी ।।
राणा ने समझावो जावो , मई तो बात न मानी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर , संता हाथ बिकानी ।।
(मीरा सुधा सिन्धु १ – पृष्ठ २५५ ,पद संख्या – ९)

मीरा जैसी स्त्रियाँ हर युग में जन्म लेती आई है, हम सभी के अन्दर कहीं न कहीं एक मीरा विद्यमान है जो अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए कुछ भी कर सकती है परन्तु हर स्त्री को परिवार की मर्यादा और मान–सम्मान की धरोहर बचाने की जंजीर में जकड़ दिया गया है | बदनामी के डर से अथवा अपनी संतान के भविष्य को ध्यान में रखकर वह भीतर की पुरुषसत्ता विरोधिनी मीरा को दबा देती है और आंसू की घूँट पीकर रह जाती है |

हर कोई स्वंतत्रता और स्वछंदता प्रिय होता है चाहे पशु ही क्यों न हों, तो एक स्त्री इन सबकी अधिकारिणी क्यों नहीं है ? युगों से स्त्रियों का शोषण होता चला आ रहा है और नारी सशक्तिकरण के नाम पर जगह–जगह वाद–विवाद प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जातीं है और भी भिन्न–भिन्न माध्यमो द्वारा इस विषय पर कहने का अवसर दिया जाता है, परन्तु ग्राउंड लेवल पर देखा जाए तो वास्तविकता कुछ और ही प्रतीत होती है | एक आधुनिक, घर से बाहर काम करने वाली स्त्री अपने नित रोज़ के समय पर घर न पहुंचे तो घर के लोग घबरा जाते है | लड़कियों के अनावश्यक घर से बाहर जाने पर आज भी रोक–टोक है, और यदि किसी प्रकार की छेड़–छाड़ या उत्पीडन अथवा बलात्कार का मामला सामने आ जाये तो या तो माता–पिता उस बात को दबा देतें है अथवा समाज बिन जाने ही उस स्त्री पर प्रश्न चिन्ह् लगा देतें हैं की अवश्य ही लड़की के वस्त्र अभद्र होंगे अथवा वह लड़की अकेले में रात में क्या करने गई थी आदि सभी प्रश्न एक स्त्री के लिये ही हैं ? क्यों एम्पावरमेंट के नाम पर उसे आज भी आज़ादी नहीं मिल पा रही है, एक स्त्री कितनी भी उचाईयां क्यों न छू ले परन्तु कहीं न कहीं वह आज भी पुरुष के आधीन ही है क्योंकि ये पुरुष समाज उन रीतियों को समाज से हटाने ही नहीं देता | कितने ही कैंडल मार्च हो जाएँ पर स्त्री की दशा आज भी वही है जो पहले थी | बदलाव केवल इतना है उसे पढ़ लिख कर आगे बढ़ने का अवसर मिल गया है पर शारीरिक रूप से उसकी सृजनात्मक शक्ति को ही उसकी कमज़ोरी बनाकर उसका शोषण होता आ रहा है | **जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य कामायनी** के **लज्जा सर्ग** से कुछ पंक्तियाँ आज भी नारी सशक्तिकरण के विषय पर संगोष्ठी या नारी दिवस पर गाई जाती हैं और नारी को उन शब्दों में जकड कर न जाने कैसे–कैसे वचनों में बांधित कर लिया गया है:

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में;
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में
देवों की विजय, दानवों की,
हारों का होता युद्ध रहा;
संघर्ष सदा उर अंतर में,
जीवित रह नित्य विरुद्ध रहा
आँसू से भींगे अंचल पर,
मन का सब कुछ रखना होगा;
तुमको अपनी स्मित–रेखा से,
यह संधि–पत्र लिखना होगा।"
(कामायनी– लज्जा सर्ग ,जयशंकर प्रसाद)

यदि नारी को श्रद्धा रूप माना है तो उसे वो सम्मान और अधिकार भी देने चाहिए जिसकी वह हकदार है | मीरा का गुण बखान आज हर व्यक्ति बड़े से बड़े मंच द्वारा करता है तथा उनका पद गायन भी करता है पर यदि कोई स्त्री मीरा की भांति अपनी मन मानी करने चलती है तो समाज द्वारा वह तिरस्कृत होती है |

निष्कर्ष – कुल मिलकर देखा जाये तो मीरा ने स्वयं संघर्ष पूर्ण जीवन यापन किया परन्तु पूर्ण नारी समाज को बहुत सी कुप्रथाओं के चंगुल से बहार निकलने का भरसक प्रयास कर नारी को अपने अधिकार के लिए आवाज़ उठाना तथा हर परिस्थिति का डटकर सामना करना सिखाया | कृष्ण वैरागन मीरा जन्म–जन्मान्तरो तक याद की जाएँगी | वैराग्य वृति के कारण जीवन में पूर्ण भौतिक सुख होने के पश्चात भी मीरा का जीवन अधूरा था क्योंकि उनकी चाह भक्ति थी | अपने गिरधर को प्राप्त करने के लिए समाज के तंज, पीडायें आदि सभी का सामना करना मीरा ने बाल्यकाल से ही सीख लिया था और इसीलिए उन पर किसी चीज़ का कोई प्रभाव नहीं होता था | सांसारिक सुख–दुःख का प्रभाव न होने के कारण ही भक्ति में लीन मीरा अपने गिरधर की यादों में ही समाई रहती थी | अतः कुल मिलकर यह निचोड़ निकलता है की भक्ति के माध्यम से नारी सशक्तिकरण की लौ जो मीरा बाई सा ने अपना जीवन त्यागकर जगाई है उसका सम्मान करते हुए हर व्यक्ति को इस विषय को गंभीरता से लेते हुए कुछ खास कदम उठाने चाहियें जो केवल भाषण, मंचो, लेखन, काव्य आदि तक ही सीमित न हो कर असल जीवन में भी स्त्री समाज के लिए मजबूत राह प्रशस्त करें |

संदर्भ सूची:

१. मीरा सुधा सिन्धु प्रथम भाग द्वितीय संशोधित संस्करण २०१८:
(चीफ एडिटर –स्वामी आनंद स्वरुप) (एडिटर–स्वामी (डॉ.) ॐ आनंद सरस्वति एंड प्रोफेसर सत्य नारायण समदानी)
(प्रकाशक– मीरा स्मृति संसथान, चित्तोडगढ़ (राजस्थान) एवं राजस्थानी ग्रंथागार ,जोधपुर) ISBN :९७८–९३–८७२९७–००–५
,पृष्ठ २५५,पद संख्या – ९, निश्चय के पद पृष्ठ संख्या ३४७

२. मीराबाई की संपूर्ण पदावली (आलोचना एवं टीका सहित):
संपादक डॉ. रामकिशोर शर्मा प्रोफेसर (पूर्व अध्यक्ष) हिंदी विभाग, इलाहबद्द विश्विद्यालय ,इलाहबाद एवं डॉ . सुजीत कुमार शर्मा अध्यक्ष, हिंदी विभाग बेनीमाधव सिंह डिग्री कॉलेज विगाहिया , इलाहबाद चतुर्थ संस्करण २०२२ लोकभारत प्रकाशन – ISBN – ९७८–८१–८०३१–७७४–3
पृष्ठ संख्या ९५ पद संख्या ३३

३. राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला– राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित
प्रधान सम्पादक– फ़तेह सिंह , एम. ए., डी. लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ग्रन्थांक : ९६ भक्त कवयित्री मीरांबाई रचित
भाषा–रूपान्तरकर्ता : मोतीलालजी मेनारिया
मीरां बृहत्पदावली – प्रथम भाग
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
वि. सं. २०२४ भारतराष्ट्रिय शकाब्द १८८९ (पद संख्या ३७९ पृष्ठ १७९)

४. मीरा और मीरा महादेवी (महादेवी वर्मा के मीरा विषयक व्याख्यान) :
पहला संस्करण–२०१३ , दूसरी आवृत्ति –२०२२ ISBN– ९७८–८१–२६७–२४९४–९
मीरा और मीरा द्वारा महादेवी वर्मा, भूमिका – अनामिका
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. १–बी , नेताजी सुभाष मार्ग , दरियागंज नई दिल्ली – ११०००२
पृष्ठ संख्या– २७

५. कामायनी– जयशंकर प्रसाद:
ई पुस्तक द्वारा हिन्दवी by रेखता
लज्जा सर्ग